क्यों खड़ा होता है बगुला एक टाँग पर?

टी. वी. वेंकटेश्वरन

...इसलिए कि अगर दूसरी टाँग भी उठा ली तो गिर न जाएँगे! कैसा रहा जवाब? खैर, मज़ाक छोड़ें। पर, सवाल तो है ही कि क्यों बगुला एक टाँग पर खड़ा घण्टों तपस्या करता रहता है। इसका आम जवाब है कि असल में वह पूरी तल्लीनता से शिकार की तलाश में लगा रहता है। यह विचार इतना आम है कि अक्सर जो लोग अपने लक्ष्य के पीछे लगातार भिड़े रहते हैं उनके लिए तमिल में कहा जाता है कि "वे एक टाँग पर खड़े हुए हैं।"

एक टाँग के सौ तर्क

तुमने बगुले की टाँगें देखी हैं? हूबहू पानी में उगे सरकण्डे या लम्बी घास जैसी दिखती हैं ना! एक टाँग पर खड़े बगुले से तुम क्या, पानी के जीव भी धोखा खा जाते हैं। वे पास चले आते हैं और बगुले का निवाला बन जाते हैं। और फिर एक टाँग की परछाईं भी तो पौधे जैसी ज़्यादा लगती है। दो तनों वाले कितने पेड़ तुमने देखे हैं, बताओ तो?

देखा जाए तो इस जवाब में थोड़ी गड़बड़ी है। हो सकता है कि इससे मछलियाँ धोखे में आ जाती हों पर पानी में रहने वाले कितने सारे पक्षी एक टाँग पर खड़े होकर ही शिकार करते हैं – फ्लैमिंगो, बत्तखें, हँस...। फ्लैमिंगो को देखा है तुमने? वह भी तो पानी में खड़े होकर पौधे, मछलियाँ आदि खाता है। पर, देखो उसका गुलाबी-सा रंग! सरकण्डा दिखने की चाहे जितनी कोशिश कर ले इस रंग-रूप के कारण वह एकदम से नज़र आ ही जाता है।

पानी में खड़े होकर शिकार करने वाले ज़्यादातर पक्षी क्यों एक टाँग पर खड़े रहते हैं इसके और भी कई कारण बताए जाते हैं। इनमें से कुछ ज़्यादा सही भी लगते हैं। जैसे, यह उनका टाँगों और पँजों को सुखाने का तरीका है। पानी में ज़्यादा देर तक रहने से सतह की तेल की परत धुल जाती है। तुमने भी तो देखा होगा कि अपने हाथ-पाँवों को देर तक पानी में रखने से उन पर झुर्रियाँ-सी पड़ जाती हैं। बारी-बारी से टाँगें बदलने से पक्षी दोनों पाँवों व पँजों को सूखने का मौका देते हैं।

लेकिन जो कारण मुझे सबसे सही लगता है उसका सम्बन्ध ऊर्जा बचाने से है। पक्षी के पंख शरीर के ताप को बाहर नहीं निकलने देते। साथ ही ठण्ड से भी शरीर को बचाए रखते हैं। पानी वाले पक्षियों की टाँगों पर पंख नहीं होते हैं। ठण्ड के मौसम में वे शरीर का काफी सारा ताप अपनी टाँगों से खो सकते हैं क्योंकि खून की नलिकाएँ त्वचा के पास होती हैं। एक बात और, तुम्हें पता होगा कि इंसानों में जितनी बार दिल धड़कता है उतनी बार शरीर के अंगों को खून भेजा जाता है। पक्षियों में भी ऐसा ही होता है। लेकिन फर्क यह है कि पक्षियों में हर बार हृदय के पम्प करने पर टाँगों को उनकी दूसरी माँसपेशियों की तुलना में तीन गुना ज़्यादा खून मिलता है। फ्लैमिंगो और क्रेन की टाँगें काफी लम्बी होती हैं। इसलिए पक्षी टाँगों और पँजों की चमड़ी से काफी ताप खो देते हैं। एक टाँग को मोड़कर अपने पंखों के भीतर रखने या गर्म शरीर के पास रखने से ताप का नुकसान कम हो जाता है। यानी कह सकते हैं कि क्रेन के एक टाँग पर खड़े होने की और ठण्ड के दिनों में हमारा हाथ मोड़कर जेब में रखने की वजह एक-सी है। लेकिन पेड़ पर रहने वाले पक्षियों के बारे में क्या कहेंगे? वे अपनी चोंचों को अपने पंखों में शायद इसी वजह से छुपाए सोते दिखाई देते हैं।

मान लेते हैं कि ऊर्जा बचाना फ्लैमिंगो का एक टाँग पर खड़ा होने की एक प्रमुख वजह है तो फिर गर्मियों की बजाय सर्दियों में वे एक टाँग पर ज़्यादा देर तक खड़े हुए दिखने चाहिए। पर पक्षी-विज्ञानियों ने तो ऐसा होते हुए नहीं देखा है। आँकड़े बताते हैं कि अलग-अलग मौसमों में उनके एक टाँग पर खड़े होने के समय में कोई बदलाव नहीं दिखता है। तो, शायद इसका जवाब इतना आसान नहीं है। हो सकता है कि एक टाँग पर खड़े होने की एक नहीं कई वजहें हों!

थक नहीं जाते वे...

हम यह तो नहीं बता सकते कि पक्षी क्यों एक टाँग पर खड़े रहते हैं पर हाँ, इतना ज़रूर बताया जा सकता है कि वे ऐसा कैसे कर पाते हैं। फ्लैमिंगो की लम्बी टाँगों के बीच में जहाँ उसका घुटना होना चाहिए था वहाँ उसका टखना होता है। और घुटना टाँग के बहुत ऊपर होता है। इतना ऊपर कि वह अक्सर छुपा रहता है। फ्लैमिंगो के टखने इंसान के टखनों से बहुत अलग होते हैं। वे एक जगह कुछ इस तरह बँध जाते हैं जैसे ताला लग गया हो। कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि शायद इसी वजह से फ्लैमिंगो एक टाँग पर खड़े होने के बावजूद इतना बढ़िया सन्तुलन बनाए रखते हैं।

पता चला है कि ऑस्ट्रेलिया के अबॉर्जिनीस आदिवासी रोज़ कुछ देर के लिए एक टाँग पर खड़े होते हैं। भीड़ में कितने ही लोग एक टाँग पर अपने शरीर का ज़्यादा भार डाले खड़े नज़र आ जाएँगे। घोड़े भी बारी-बारी से एक टाँग को उठाए दिख जाएँगे। सवाल उठता है कि आखिर क्यों दो-पाए जीव एक टाँग पर ज़्यादा भार डाले खड़े होते हैं? अभी तक तो यह रहस्य ही है शायद आगे इसका खुलासा हो पाए..।

लड़का: "मुझे गणित का एक सवाल समझा दीजिए। सवाल यह है कि वह बड़ी संख्या बताओ जिसका भाग सभी संख्याओं से हो जाए।"
पिता: "हे भगवान! क्या वे अभी तक वह संख्या नहीं ढूँढ पाए? जब मैं पढ़ता था तभी से वे इस संख्या को ढूँढ रहे हैं।"

एक चीनी पर्यटक जब भारत आया, तो दिल्ली में अपने एक पंजाबी मित्र के घर निमंत्रण पर गया। वहाँ उसका अच्छा अतिथि सत्कार हुआ। थोड़ी देर बाद उसे देसी घी से चुपड़ी मक्के की रोटी और सरसों का साग खाने के लिए दिया गया। चीनी साग को खा गया और रोटी को अपने मित्र की ओर बढ़ाते हुए बोला, "यह अपनी प्लेट ले लो।"